



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय इतिहास	विषय कोड 110	परीक्षा का माध्यम हिन्दी
तार के निशान ↓ से मिलाकर लगायें		
उत्तर पुस्तिका का क्रमांक A-	1118197	
अंकों में	परीक्षार्थी का रोल नम्बर	
- 2 8 2 5 3 6 9 7 3		
शब्दों में	- दो आठ दो पाँच तीस छः नौ सत्र तीस	

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

उत्तराथ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में **03** शब्दों में **तीन**

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक **09**

ग :- परीक्षा का दिनांक **14 03 18**

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S.S.C **NO: 252008**

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

[Signature] *[Signature]*

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई हो। क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाए।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

सिंह सिकरवार
परिष्ठा अध्यापक
क्रमांक
प. सं. 16

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

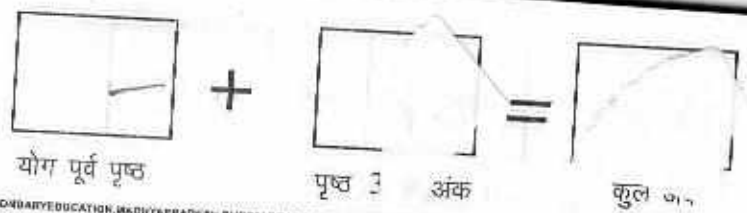
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99 1x33.5mmx16

e/mot

3



प्रश्न-(1) का उत्तर

(अ) मुलाम वंश

(ब) ए.ओ. लूम

(स) विवेकानंद

(द) सिराजुद्दौला

(इ) शिवाजी

प्रश्न (2) का उत्तर

स्तम्भ (अ)

स्तम्भ (ब) उत्तर

(i) कालिदास

मेघदूत

(ii) मुहम्मद-बिन-तुगलक -

राजधानी परिवर्तन

(iii) वाल्मीकि

- रामायण

(iv) वाणभट्ट

- हर्षचरित

(v) गीतम बुद्ध

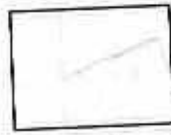
- लुम्बिनी



4



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(3) का उत्तर

(i) रामराट्ट (सै)

(ii) सूरत (1907)

(iii) महात्मा गाँधी

(iv) अकबर

(v) गुलबदन बेगम

B

S

E

प्रश्न-(4) का उत्तर

(i) असत्य

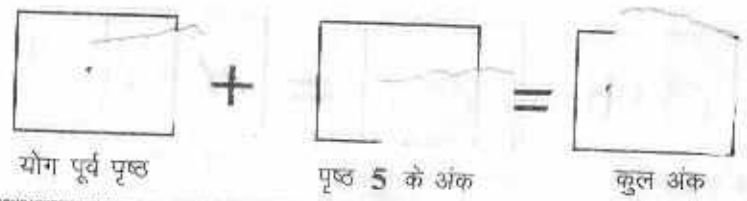
(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

5



श्न क्र.

प्रश्न-(5) का उत्तर

- (i) समझिये रजिया सुलतान
- (ii) जहाँगीर के
- (iii) शमल आलम शाह आलम
- (iv) 1906 ई० में
- (v) बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

प्रश्न-(6) का उत्तर

इलाहाबाद की संधि 1765 में शाह आलम व शुजाउददौला की अगुओं के साथ बक्सर युद्ध के बाद संधि हुई थी।

प्रश्न-(7) का उत्तर

पानीपत का प्रथम बाबर और इब्राहीम इब्राहीम लोधी के मध्य 1526 ई० में पानीपत के मैदान में लड़ा गया था।

6

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 6 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न- (8) का उत्तर

पल्लव वास्तुकला की महेन्द्र शैली की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(1) इस शैली का विकास महेन्द्र महेन्द्रवर्मन प्रथम के शासन काल के होने के कारण इसका नाम महेन्द्र शैली पड़ा गया।

B
S
E

(2) इस शैली के अन्तर्गत स्तम्भ युक्त मण्डपों का निर्माण किया जाता है।

प्रश्न- (9) का उत्तर

जैन धर्म के चिरन्तन निम्न प्रकार से थे -

(1) सम्यक् दर्शन

(2) सम्यक् ज्ञान

(3) सद् चरित्र चरित

7



प्रश्न क्र.

प्रश्न- (10) का उत्तर

प्रागैतिहासिक काल -

"जिस काल का कोई भी लिखित वर्णन नहीं प्राप्त नहीं होता है उसे प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है।"

नव जब लिखने की कला से अनभिज्ञ था तब भी वह जीवन बिताता था

प्रश्न- (11) का उत्तर

मुगलों की "दहसाला बन्दोबस्त" व्यवस्था की विशेषताएँ निम्नलिखी थी -

- (1) इस व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि की माप को रूसियों रूसियों के स्थान बाँस से मापा जाने लगा था तथा बाँस के बीच - बीच में लौहे के इतले लगे होते थे।
- (2) इस व्यवस्था में भूमि की रकई को बीघा माना जाता था तथा भूमि की बीघा रकई की माप $60 \times 60 = 3600$ वर्ग मील होती है।



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 8 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

(9) इस व्यवस्था में बूगि के माप के गज-ए-सिक-दरी के स्थान गज-ए-इलाही का प्रयोग किया जाने लगा।

प्रश्न-(12) का उत्तर

मुगल साम्राज्य के पतन के कई कारण थे जिनमें से प्रमुख कुछ निम्न प्रकार हैं-

(1) साम्राज्य की विशालता-

मुगलों के औरंगजेब तक आते-आते साम्राज्य अत्यंत विशाल हो चुका था तथा इतने बड़े साम्राज्य पर नियंत्रण रख पाना अत्यंत कठिन हो रहा था जो मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बना।

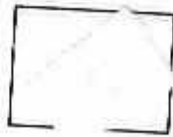
(2) अयोग्य उत्तराधिकारी -

औरंगजेब के बाद ऐसा कोई भी सुयोग्य शासक नहीं हुआ जो साम्राज्य का नियंत्रण स्थापित कर सके। अतः अयोग्य व निर्वल उत्तराधिकारी मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बने।

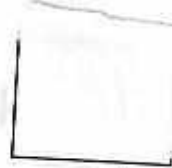
9



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(3) उत्तराधिकारी नियमों का अभाव -

मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकारी नियमों का अभाव था तथा सम्राट की मृत्यु के बाद राजपुत्रों में ही संघर्ष प्रारंभ हो जाता था।

अतः उत्तराधिकारी नियमों का अभाव ही मुगल शासन के पतन का कारण बना।

प्रश्न- (13) का उत्तर (अथवा) (अथवा)

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के तहत महात्मा गांधी जी द्वारा निम्न मांगों की गईं जो इस प्रकार हैं -

- (1) रुपये की बाह्य दर 1 शिलिंग 4 पैसे की जाय।
- (2) जिस व्यक्तियों के खिलाफ हिंसा, हत्या आदि का कारण बलीया आरोप नहीं है उन्हें कारागारों से मुक्त किया जाए।
- (3) बमक को बनाने के लिए कर समाप्त किया जाए।

10



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 10 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-(14) का उत्तर (अथवा)

4 जुलाई 1947 को अंग्रेज सरकार ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित का प्रस्ताव रखा तथा 14 जुलाई 1947 ई० को इसे लागू कर दिया जिसकी प्रमुख अवधारणा निम्नलिखी थी -

(1) भारत (पकिस्तान) का विभाजन -

इस अधिनियम के तहत भारत का विभाजन पकिस्तान बना दिया गया तथा 15 अगस्त 1947 के बाद से भारत व अ पकिस्तान 2 दो अधिराज्य बना दिये गये।

(2) भारत मंत्री पद की समाप्ति समाप्ति -

इस अधिनियम के द्वारा भारत मंत्री के पद को समाप्त कर दिया गया व भारत व पकिस्तान पर ब्रिटिश प्रभुत्व समाप्त हो गया।

(3) संविधान सभाओं को सत्ता अहस्तांतरण -

ब्रिटिश सरकार ने पकिस्तान व भारत की संविधान सभाओं को हटाकर सत्ता प्रदान कर दी।

11



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ II के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न-(15) का उत्तर

म.प्र में साँची स्तूप -

मध्य प्रदेश के रायसेन जिले से 25 km की दूरी पर दक्षिण दिशा में साँची स्थित है।

इस स्तूप का निर्माण मुख्य रूप से मौर्य सम्राट अशोक ने करवाया था।

इस स्तूप के चारों ओर दो प्रदक्षिणा प्रदक्षिणा पथ हैं। इस स्तूप के चारों सुन्दर वेदिकाएँ अवस्थित हैं।

इस स्तूप में दो छोटे व एक बड़ा स्तूप निर्मित किया गया है।

इस स्तूप में जो बड़ा स्तूप है उसे महास्तूप कहा जाता है जिसमें महात्मा

के शरीर को रखा गया था तथा

द्वितीय स्तूप में अशोक के समय

के बौद्ध प्रचारकों के शरीर को रखा

गया है तथा तृतीय में महात्मा बुद्ध

के दो शिष्यों के शरीर को रखा गया

है।

इस स्तूप को विशालता शृंग काल में मिली। इस स्तूप को शृंग काल में लाल बलुआ पत्थरों से बनवाया गया।

12



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 12 के अंक

2.1 अंक



प्रश्न क्र.

इस स्तूप की दीवारों पर महात्मा बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित सभी वस्तु चित्र उकेरे गये।

जो महात्मा बुद्ध व उस काल की गाथा को सहज की ही बताते हैं।

प्रश्न - (16) का उत्तर (भथवा)

B
S
E

रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द जी ने थी इस के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलि हैं -

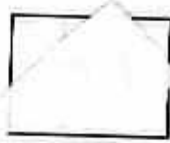
(1) एकेरवादीता की स्थापना -

इस मिशन का मुख्य उद्देश्य था कि लोगों के आपसी मतभेद, धार्मिक भावना तथा धर्मों के प्रति भेदभाव की भावना से ऊपर उठकर एक "ईश्वर एक ही" इस सिद्धान्त को बताना था।

(2) सामाजिक कुरीतियों व पर कुठाराघात -

इस मिशन का एक उद्देश्य यह भी था कि सामाजिक कुरीतियों जैसे सती प्रथा,

13



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 13 के अंक

=



कुल अंक



वाल विवाह, कन्या बध तथा आदि का विरोध कर इनको समाप्त करना था।

(3) राष्ट्रवादिता की भावना को जगाना -

इस मिशन का एक उद्देश्य यह भी था कि ब्रिटिश शासन के विरोध विरुद्ध लोगों में अपने राष्ट्र के लिए प्रेम की अलग जागना था।

(4) सामाजिक जागृति को जगाना -

इस मिशन का एक उद्देश्य है भी था कि लोगों में समाज व राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना को बढ़ाना था तथा हिन्दू धर्म तथा संस्कृति की पुनर्स्थापना करना था।

14



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 14 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न-11) का उत्तर (अथवा)

भारत में पुर्तगालियों के पतन के कारण
निम्नलिखित हैं -

(1) अयोग्य उत्तराधिकारी -

अल्बुकर्क की मृत्यु के बाद पुर्तगाल
गवर्नर अयोग्य व निर्वल थे
वे अपने निजी स्वार्थ में लगे रहते
हैं जिसके कारण जिसके कारण
जनता का उन पर विश्वास उत्पन्न
नहीं हो सका।

(2) भ्रष्टाचार -

पुर्तगालियों द्वारा व्यापार नीति तैयार
की गयी थी वह भ्रष्ट थी।
पुर्तगालियों अधिकारियों के वेतन
अत्यन्त कम थे जिसके कारण
सर्वत्र भ्रष्टाचार का बीज बोला था
तथा भ्रष्ट कर्मचारियों से योग्य
ख शासन करना व्यर्थ था।

(3) ब्राजील की खोज -

पुर्तगालियों ने दक्षिण अमेरिका में
मे एक नये उपनिवेश की खोज

B
S
E

15

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 15 के अंक कुल अंक



लिया था तथा उन्होंने भारत की अपेक्षा नये उपनिवेश ब्राजील पर अधिक ध्यान दिया। जो उनके पतन का कारण बना।

(प) सीमित साधन-

पुर्तगालियों के पास भारत जैसे साम्राज्य को जो बहुत विशाल था उस पर नियंत्रण रखने के लिये पर्याप्त साधन नहीं थे तथा जब उनका मुकाबला मुगलों, मराठों व अंग्रेजों से हुआ तो वे अपने आप को असहाय समझने लगे।

जो पुर्तगालियों के भारत में पतन का कारण बना।

प्रश्न-(18) का उत्तर

शिवजी एक छोटे से ज़मींदार के पुत्र थे अतः उन्होंने सबसे पहले अपने लक्ष्यों को निम्न प्रकार से निर्धारित किया था।

जो निम्न प्रकार से है -



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 16 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(1) पूना में स्वतंत्र राज्य की स्थापना -

शिवाजी एक दौरे से जागीदार के पुत्र थे। उनके साधन सीमित थे वे पूना व इसके आस-पास के जागीदार थे। अतः उन्होंने सर्वप्रथम लक्ष्य अपनी जागीर को मजबूत कर उसके स्वामी बनने का था।

B
S
E

(2) हिन्दू धर्म, ब्राह्मण व गौ रक्षा करना -

शिवाजी का जन्म एक हिन्दू परिवार में हुआ अतः वे हिन्दू धर्म, संस्कृति आदर्शों के प्रति पूर्ण सजग थे जिसके कारण उन्होंने हिन्दू धर्म ब्राह्मण व गौ रक्षा को अपना लक्ष्य बनाया।

(3) मुगलों के अधीन न रहना -

शिवाजी मुगलों की क्रूरता, निर्दयीता व पक्षपात भाव के कारण उनके हृदय में मुगलों के प्रति घृणा भाव उत्पन्न हो गया था तथा वे वे अन्य सराठी सरदारों के समान मुगलों के अधीन रहकर जीवना नहीं चाहते थे।

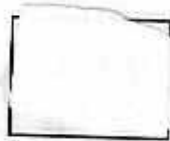
17



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 17 के अंक

कुल अंक



(प) हिन्दू धर्म की पुनर्स्थापना -

शिवाजी मुगलों के विरुद्ध मैदान हिन्दू धर्मधोष लेकर खड़े हुए।

उन्हीं मुगलों के विपक्ष में हिन्दू धर्म व नीतियों का सहारा लिया।

प्रश्न-(19) का उत्तर (भयवा)

चोल शासकों की स्थानीय स्वशासन की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित थीं -

- (1) चोल काल में राज्य की सबसे छोटी इकाई गाँव होती है। व गाँव कर वसूली का कार्य गाँव की पंचायतों द्वारा किया जाता था।
- (2) चोल काल में गाँवों की सभा को दो भागों में बाँटा गया था पहली जो राजा द्वारा किसी विद्वान को उपहार स्वरूप दी जाती थी उसे चतुर्वेदिक कहा जाता था जिसकी समिति सभा कहा जाता था तथा जो सामान्य गाँव होते थे उनकी समिति उरार कंतया गाँव उर कहा जाता था।

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

अंक



प्रश्न क्र.

(3) चोलकालीन प्रशासन व्यवस्था में सभी कार्य जनता के हित को देखकर किये जाते थे। गाँव पंचायतों द्वारा अनेक प्रकार के कर जैसे - करीगर, बुनकर, सुनार आदि लोगों से कर लिये जाते थे जिनसे राजकीय कार्य किये जाते हैं।

B
S
E

(4) चोलकालीन प्रशासन व्यवस्था के अन्तर्गत के ग्राम पंचायतों की समार्ये मंदिरों व पेड़ों की द्वाय में सम्पादित की जाती है।

(5) ग्राम व्यवस्था का ग्रामणी अधिकारी होता था।

प्रश्न - (20) का उत्तर

वैदिक काल के ऋषि मुनियों मानव जीवन को चार भागों में बाँटा था जो निम्न प्रकार थी -

(1) ब्रह्मचर्य आश्रम - जीवन के प्रारम्भिक 25 वर्षों तक गुरु के आश्रम में रहकर विद्या

19

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 19 के अंक कुल अंक



अर्जित करवा था तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य की पालना पड़ना था।

(2) गृहस्थ आश्रम -

जीवन के अगले 25 वर्ष अर्थात् 25 वर्ष से 50 वर्ष तक व्यक्ति को गृहस्थ आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत रहना पड़ता था। जिनमें व्यक्ति परिवार के साथ रहकर धन कमाता था तथा अतिथियों का स्वागत करता था।

(3) वानप्रस्थ आश्रम -

इस आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत जीवन के अगले 25 वर्ष से वानप्रस्थ आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति को रहना पड़ता था। इस आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति 50 वर्ष से 75 वर्ष की आयु बिताता था। इन आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति अपने को छोड़कर त्याग तथा तपस्या करता था।

(4) संन्यास आश्रम -

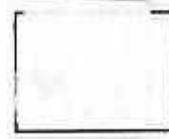
इस आश्रम के अन्तर्गत व्यक्ति अपनी आयु अगले 25 वर्ष अर्थात् 75 वर्ष से 100 वर्ष



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

तक की आयु व्यक्ति सन्यास आश्रम में विताता था। वह परिवार तथा पत्नी बच्चों से नाना प्रकार छोड़ देता था तथा पूर्णतया ईश्वरीय भाक्ति में लीन हो जाता था।

इस प्रकार मनीषी आर्यों ने जीवन को चार भागों में बाँटकर मानव जीवन को सुफल बनाने का प्रयास किया था।

B
S
E

प्रश्न-(22) का उत्तर

अशोक एक महान विजेता, कुटनीतिज्ञक तथा धर्मपरायण व्यक्ति था।

उसे महान कहे जाने के प्रमुख कारण निम्नलि हैं -

(1) आदर्श तक्ष आदर्शी तथा उच्चव्यक्तित्व -

अशोक के अन्दर एक महान प्रजापति कुशल प्रशासक, उदारता, अहिंसा, धर्मपरायणता, सहयोग, सदभावना के भाव विद्यमान थे।

वह एक उच्च व्यक्तित्व तथा महान

21



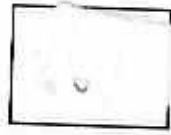
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 21 के अंक

=



कुल अंक



प्रशासक था।

कारण: इन सब गुणों के कारण उसे महान
कहा जा स्वामिक था।

(2) महान विजेता -

अशोक एक महान विजेता था। वह जितना
युद्धक्षेत्र में प्रसिद्ध नहीं हुआ जितना वह
धर्मक्षेत्र में प्रसिद्ध हुआ।

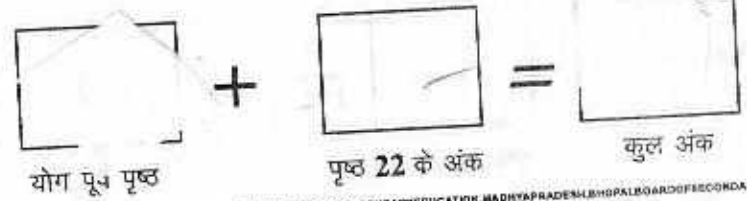
अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद युद्धक्षेत्र
के स्थान पर धर्मक्षेत्र निकाले।
विश्व में वही एक मात्र शासक है जिसने
नलवार के स्थान पर अहिंसा व
साय की नीतियों का प्रयोग किया।

(3) कर्तव्यनिष्ठ -

अशोक एक कर्तव्यनिष्ठ शासक था वह
जीवन का प्रत्येक क्षण अपनी ही जनता
के हित कार्यों में लगाना चाहता था
इसलिए उसने कहा था कि -

" मैं जो भी पराक्रम करता हूँ वो
आपका मुस पर जो कृपा है उसके
में व पराक्रम करना हूँ। "

इस उक्ति से हम अशोक की कर्तव्यनिष्ठा
जनता के प्रति जो उसमें थी उसे
समझ सकते हैं।



प्रश्न क्र.

(3) कुशल प्रशासक -

अशोक एक कुशल प्रशासक प्रशासक भी था उसने राज्य का स्थायी रूप से निरूपण करने के लिए राजगुप्तों की नियुक्ति कृतया वह स्वयं भी जनता के बीच जाकर जनता के कष्टों का विवरण करता था।

उसके ख शासन में जनता बहुत व साहसिक थी। पूर्ण थी।

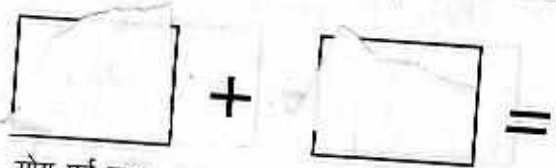
B
S
E

(4) लोक कल्याण परायण शासक -

अशोक अपनी सभी कार्य अपनी जनता के हित को देखकर करता था।

इसके अतिरिक्त अशोक ने जनता के हित के लिए सड़को का निर्माण करवाया, पेयजल की व्यवस्था की, सड़को के दोनों ओर पेड़ लगवाये व सरायों की स्थापना की।

23



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक



(5) स्याणी मात्र के प्रति प्रेम -

अशोक ने केवल मानव जाति के ऊपर उदार दृष्टिकोण रखना बल्कि वह पशु, पक्षियों के ऊपर भी दया तथा उदार का भाव रखता था। अशोक ने अनेक पशु-पक्षियों के लिए अश्रमशालाओं का निर्माण कराया तथा पशु बलि पर भी शोक लगा थी।

अतः स्पष्ट विवेचन से स्पष्ट होता है कि अशोक एक महान शासक था।

प्रश्न-(23) का उत्तर

अलाउद्दीन रिबलजी का मुख्य उद्देश्य था कि कम वेतन में अधिक सेना रखने के लिए उसने बाजार नियंत्रण नीति बनाई जिसके लिए ~~समूह~~ उसने समुद्रव कार्य किये -

(1) मुख्य नियंत्रण व बाजार की स्थायी जावकारी -

अलाउद्दीन रिबलजी ने जीवन से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण वस्तुओं का मुख्य निश्चित कर दिया तथा उसने कपड़ा,

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

भनाज, व जकरत चीलों के मूल्य विरिक्त कर दियो तथा इसके साथ-साथ बाजार के निरीक्षण के लिए उसने "शहना-ए-महरी" नामक अधिकारी की नियमित की थी तथा उसकी सहायता के लिए बरीद नामक अधिकारी की नियमित की थी। तथा बाजार सम्बन्धी सभी सूचनाओं की रखा गुप्त रूप से जानकारी के लिए उसने मुवदियान नामक अधिकारी की नियमित भी की थी।

B
S
E

(2) वस्तु की पूर्ति पर नियंत्रण -

मुलाउद्दीन ने जीवन के सर्वप्रमुख भनाज की पूर्ति के लिए सरकारी अन्नभांडार गृहों में भनाज की पूर्ति को बढ़ाने के लिए निर्देश दिये गये। जिसके लिए सुलतान दो भाव के किसानों से नगद कर के स्थान पर भनाज के रूप में कर लिये तथा किसानों के लिए यह निर्देश दिये गये कि वे मात्र अपने परिवार के लिए जितना उपयोगी भनाज आवश्यक है उतना ही लें।



परीक्षा का विषय

इतिहास

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

हिंदी

परीक्षा का दिनांक

14/03/18

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक

C-

3244921

अंकों में

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2 8 2 5 3 6 9 7 3

शब्दों में

दो अक्षरों पॉयलीन दः नीं अत नीं

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की जुड़ा

HSSC C.NO. 252008

पर्यवेक्षक का नाम

[Signature]

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

[Signature]

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक..... तक कुल प्राप्तांक + =

सुल्तान की रक्त शक्ता के बाद जीवन उपयोगी अनाज की कमी भी कमी नहीं पड़ी।

B
S
E (3) शहना-प-मण्डी को अधिकार सम्पन्न बनाना -

सुल्तान ने शहना-प-मण्डी को अधिकार सम्पन्न बनाने के लिए यह आदेश दिये की वह मण्ड व्यापारियों को पकड़े तथा उन पर मुकदमा चलाए तथा किसी प्रतिष्ठित व्यापारियों की जमानत पर छोड़ने का प्रावधान था।

पृष्ठ के अंकों का योग

(4) वस्तुओं की उचित वितरण व्यवस्था -

शुल्क - ए - एम - सुल्तान ने वस्तुओं के वितरण की भी उचित व्यवस्था की। तथा व्यापारियों के कोठे निर्दिष्ट कर दिये। किसान 10 मन से अधिक खानाज संग्रहित कर सकता था। तथा प्रत्येक व्यक्ति को प्रशस्त पत्र के आधार भी उपयोगी वस्तुओं की ज़रूरत थी।

(5) भ्रष्टाचार पर नियंत्रण तथा कठोर कानून व्यवस्था -

अलाउद्दीन खिलजी ने भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर कानून व्यवस्था की थी। उसके एक आदेश के अनुसार "जो व्यापारी जितना कम बोलता है उतना ही शरीर से आदेश लेने के

इस प्रकार बजार नियंत्रण व्यवस्था जनता को जीवन उपयोगी वस्तुओं के मूल्य पर मिलने लगी।



~~प्रश्न - 3~~

प्रश्न - (21) का उत्तर

पुरापाषाणकाल व नवपाषाणकाल में समुच्च
अन्तर बिलि है -

पुरापाषाणकाल	नवपाषाणकाल
(1) इस काल के मानव के औजार, भददै वेडॉल इवुरदरे होते थे।	(1) इस काल के मानव के औजार चिकने, चमकदार व पॉलिशदार होते थे।
(2) इस काल के मानव को पशुपालन का ज्ञान नहीं था।	(2) इस काल के मानव को पशुपालन का ज्ञान था। उच्च वे कुत्ते, गाय बिल भैंस वकरी आदि को पालते थे।
(3) इस काल के मानव को कृषि का ज्ञान नहीं था।	(3) इस काल के मानव ने जका कृषि करना सीख लिया समुच्च कृषि उपजें बाजार, गेहूँ, मक्का आदि थी।
(4) इस काल का मानव जंगलो, गुफाओ में रहता था।	(4) इस काल के मानव घास फूस, मिट्टी पत्थर की सहायता से आवास बनाकर रहते

4
प्रश्न- (24) का उत्तर

शिवाजी की केंद्रीय शासन व्यवस्था निम्न प्रकार थी -
केंद्रीय शासन

(1) राजा -

राजा राज्य का प्रधान होता था वह अपनी इच्छा का मालिक होते हुए भी निरंकुश नहीं था तथा राजा राज्य की प्रजा के हित के लिए सभी कार्य करता था।

(2) अष्टप्रधान मंत्रिपरिषद् -

शिवाजी को शासन में सहायता में सहायता करने के लिए एक आठ मंत्रियों के समिति होती थी जिसे अष्टप्रधान कहते थे।
अष्टप्रधान के सभी मंत्री सेनापति को दंड व ब्राह्मण होते हैं थे।

(3) सेना व्यवस्था -

शिवाजी के सेना में उच्च - पञ्जो घुड़ सवार की सेना तथा इससे कई अधिक पैदल सेना भी थी।



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

2018

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जाने ↓

परीक्षा का विषय

विषय कोड

परीक्षा का माध्यम

परीक्षा का दिनांक

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगाये

→ परीक्षार्थी द्वारा भरा जाने

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक

C- 3244924

अंकों में

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2 8 2 5 3 6 9 7 3

शब्दों में

दो आठ दो पाँच तीन दसवीं सात तीन

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केंद्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC
C: NO. 252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक

.....तक कुल प्राप्तांक

+ =

शिवाजी की सेना में तोप खाना नामक एक अलग विभाग होता था। सेना का प्रधान सेनापति था।

(प) राजसूय - शिवाजी की भाय का समुद्र स्त्रोत समुद्र था। सिक्की के शिवाजी की राज्य में चौथे व सारदेशा समुद्र कर थे जो विभिन्न प्रदेशों पर लगाये जाते थे।

(ड) व्याय व्यवस्था -

शिवाजी की व्याय व्यवस्था बहुत कठोर थी तथा व्यायधीशों की नियुक्ति राजा स्वयं करना था। राजा सर्वोच्च व्यायधीश होता है।

पृष्ठ के अंकों का योग



शिवाजी की कठोर व्याय नीति के
भ्रष्टाचार कम होते थे।

शिवाजी के साम्राज्य में जनता खुश
व समृद्धि थी।

प्रश्न- (25) का उत्तर

19 वीं शताब्दी भारतीय इतिहास काल
में पुनर्जागरण की सदी कही जाती
है।

पुनर्जागरण के समुच्चय कारण निम्नलि-
थे -

(1) पाश्चात्य साहित्य व शिक्षा -

पाश्चात्य शिक्षा व साहित्य ने भारतीय
तथा स्वतंत्र राष्ट्रियता को
भारत के देश की संस्कृति व प्राचीनता
से अवगत कराया।

जिससे भारतीयों का मस्तिष्क सक्रिय
बना और वे भारतीय समस्याओं
के प्रति सजग हो गये तथा
पुनर्जागरण के आन्दोलन चल पड़े।

(2) समाचारपत्र व पत्रिकाएँ -

समाचार पत्र व पत्रिकाओं ने ब्रिटिश अधिकारियों को के भारतीय के प्रति व्यवहार से भिन्नगत कराया जिससे भारतीयों में अपने देश के राष्ट्रियता की भावना का विकास हुआ।

(3) 19 वीं शताब्दी के धर्म सुधारकों का प्रभाव -

भारतीय भूमि पर 19 वीं शताब्दी में कई धर्मसुधारकों ने जन्म लिया जिन्होंने भारतीय में राष्ट्रियता की भावना जागृत की।

इन नेताओं में प्रमुख राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, दयानन्द सरस्वती आदि हैं उल्लेखनीय योगदान विभिन्न भाषाओं में।

(4) भारतीयों को विदेशी साहित्य से गौरव का ज्ञान -

भारतीयों को विदेशी शिक्षा व साहित्य से अपने भारत

की प्राचीन सभ्यता व गीर्वाण का
 ज्ञान हुआ जिससे उनसे आत्महीनता
 के स्थान आत्मविश्वास की
 भावना उत्पन्न हुई।

(5) अन्तर् विदेशी धर्म प्रचारकों के इसी
 धर्म का प्रचार -

विदेशी धर्म प्रचारकों ने भारत
 में इसी धर्म का प्रचार किया
 तथा धर्म के लोभ में हिन्दू
 जो निर्धन शीघ्र गति से इसी
 धर्म में आने लगे थे।
 धर्म सुधारकों की आँखें खुली
 तथा धर्म सुधार के आन्दोलन
 चल पड़े।



प्रश्न-(26) का उत्तर (अथवा)

सविनय अवज्ञा आन्दोलन मध्य में -

भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा 26 जनवरी 1930 जब पूर्ण स्वाधीनता दिवस मनाने के बाद गाँधी जी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने के सभी अधिकार सौंप दिये गये। अतः गाँधी जी ने 6 अप्रैल 1930 को नमक कानून काण्डी में तोड़कर इस आन्दोलन की शुरुवात की।

जिस दिन महात्मा गाँधी ने नमक कानून भंग कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया गया था उसी दिन मध्य प्रदेश में सेठ गोविन्द दास तथा हारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस रतन जबलपुर में रानी दुर्गावती की समाधि पर इस आन्दोलन की शपथ के लिये ले जाया गया था।



इस आन्दोलन के में कई लोगों ने भाग लिया जिनका जोश परकाष्ठा पर था।

इस जूलूस में द्वारकाप्रसाद मिश्र, सेठ गोविन्ददास, सर्वात्मल जैन, सुभद्राकुमारी चौहान, नारायण दत्त त्रिवारी आदि लोगों ने इस आन्दोलन में भाग लिया।

इस आन्दोलन के कारण जबलपुर में शरबकंदी व स्वदेशी आन्दोलन का तीव्र गति से चल रहे थे।

27 अप्रैल 1930 को

8 अप्रैल 1930 को एक सभा का आयोजन जबलपुर में इस आन्दोलन को तीव्र गति प्रदान करने के लिए चलाया गया था।

28 अप्रैल 1930 को सेठ गोविन्ददास द्वारकाप्रसाद मिश्र, सुभद्राकुमारी चौहान, नारायण दत्त आदि वही नेताओं को गिरफ्तार कर दिया गया था।

जब सरकार द्वारा इस आन्दोलन को

ली प्र गति से कम किया गया
लेकिन इस आन्दोलन में
संघ के लोगो ने बड़े-बड़े
कर भरण लिया।

9 अप्रैल को 1930 को
सविनय अवज्ञा की श्रृंखला के
कांग्रेस द्वारा बंदी में
की गई।

जिसमें सविनय अवज्ञा आन्दोलन
के साथ-साथ जंगल सत्याग्रह
मध्य भारत में चलाने का
निर्णय लिया।

संघ में जंगल सत्याग्रह का
स्थापक रूप में फैलाया इस
आन्दोलन में बंदी के
दोड़ा डोगरी के लोगो इस
आन्दोलन बहुत महत्वपूर्ण
भूमिका।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन
भारत में राष्ट्रियता की
भावना पैदा करने सहाय
रहा।